National Journal of Advanced Research
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-216X
Received: 28-04-2026, Accepted: 29-05-2026, Published: 13-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 23-26

माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. एकता पारीक[1], पूजा कुमारी चौधरी[2]
[1] प्राचार्या, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर, राज्यस्थान, भारत
[2] बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर, राज्यस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/njar.2026.12.2.12023

सारांश
प्रस्तुत शोध–पत्र का विषय "माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन" है। यह अध्ययन विशेष रूप से जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के संदर्भ में किया गया है। भाषा शिक्षण विद्यालयी शिक्षा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि चिंतन, अभिव्यक्ति, रचनात्मकता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा सामाजिक सहभागिता का आधार भी है। हिन्दी भाषा भारतीय शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन में एक केंद्रीय स्थान रखती है। माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा का अध्यापन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, अभिव्यक्ति कौशल, साहित्यिक रुचि तथा मूल्य विकास में विशेष योगदान देता है।
अध्यापक की अभिवृत्ति शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। यदि शिक्षक हिन्दी भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, रुचि, समर्पण एवं उत्साह रखता है, तो वह विद्यार्थियों में भाषा के प्रति प्रेरणा एवं सीखने की इच्छा उत्पन्न कर सकता है। इसके विपरीत नकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करती है। प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के 200 माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति सकारात्मक पाई गई।

मूलशब्द: हिन्दी भाषा, अध्यापन अभिवृत्ति, माध्यमिक स्तर, शिक्षक, जयपुर जिला, भाषा शिक्षण, शिक्षण गुणवत्ता

माध्यमिक शिक्षा किसी भी शिक्षा प्रणाली का अत्यंत महत्वपूर्ण स्तर है। यह वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थियों के बौद्धिक, भाषाई, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास की मजबूत नींव रखी जाती है। इस स्तर पर विद्यार्थी बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसर होते हैं और उनकी तर्क क्षमता, अभिव्यक्ति, निर्णय शक्ति तथा व्यक्तित्व का विकास तीव्र गति से होता है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।
हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं राष्ट्रीय एकता की प्रमुख संवाहक है। विद्यालयी शिक्षा में हिन्दी भाषा का विशेष महत्व है क्योंकि यह विद्यार्थियों के पठन, लेखन, वाचन, श्रवण तथा अभिव्यक्ति कौशल के विकास का प्रमुख साधन है। माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा का प्रभावी अध्यापन विद्यार्थियों को साहित्यिक चेतना, सांस्कृतिक समझ तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति से जोड़ता है।
अध्यापन अभिवृत्ति से आशय अध्यापक के उस दृष्टिकोण, भावना एवं व्यवहार से है जो वह अपने विषय के शिक्षण के प्रति प्रदर्शित करता है। यदि अध्यापक की अभिवृत्ति सकारात्मक होती है तो वह अधिक समर्पण, नवीन शिक्षण विधियों तथा छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण के साथ अध्यापन करता है। यही कारण है कि हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं। नई शिक्षा नीति, तकनीकी साधनों का उपयोग, स्मार्ट कक्षाएँ एवं डिजिटल सामग्री ने भाषा शिक्षण को एक नया आयाम प्रदान किया है। ऐसे परिवर्तित परिवेश में यह आवश्यक है कि हिन्दी भाषा अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया जाए।
माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी मानसिक एवं सामाजिक रूप से अत्यंत संवेदनशील अवस्था में होते हैं। इस समय अध्यापक की सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों में भाषा के प्रति रुचि, आत्मविश्वास एवं साहित्यिक अभिरुचि विकसित करने में सहायक होती है। इसलिए यह अध्ययन भाषा शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी शोध कार्य की वैज्ञानिकता एवं प्रामाणिकता उसके सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन पर निर्भर करती है। साहित्य का पुनरावलोकन शोधकर्ता को विषय की पृष्ठभूमि, पूर्व में किए गए अध्ययनों, शोध–अंतर (Research Gap) तथा वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता को समझने में सहायता प्रदान करता है। प्रस्तुत अध्ययन "माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन" से संबंधित है, अतः इस संदर्भ में शिक्षकों की अभिवृत्ति, भाषा शिक्षण, शिक्षण प्रभावशीलता तथा माध्यमिक स्तर पर भाषा अध्यापन से जुड़े विभिन्न शोधों का अवलोकन अत्यंत आवश्यक है।
देवेन्द्र कुमार यादव एवं श्रद्धा सिंह द्वारा माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के संबंध पर किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि जिन शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक थी, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी अपेक्षाकृत अधिक थी। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षक की सकारात्मक मानसिकता कक्षा में विद्यार्थियों की सहभागिता एवं उपलब्धि को बढ़ाती है। यह निष्कर्ष प्रस्तुत शोध के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापक की अभिवृत्ति भी इसी प्रकार विद्यार्थियों की भाषा दक्षता को प्रभावित करती है।
उर्वषी बत्रा एवं डॉ. मृदुला शर्मा द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की मिश्रित शिक्षण (Blended Learning) के प्रति अभिवृत्ति पर किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षकों की सकारात्मक अभिवृत्ति नई शिक्षण तकनीकों एवं नवीन शिक्षण

विधियों के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया कि जिन शिक्षकों में विषय के प्रति अधिक रुचि एवं समर्पण पाया गया, वे विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षण प्रदान करने में सक्षम रहे। प्रस्तुत शोध में हिन्दी भाषा के अध्यापन के संदर्भ में यह निष्कर्ष अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भाषा शिक्षण को अधिक छात्र–केंद्रित एवं तकनीकी–सक्षम बनाने की आवश्यकता है।

NCERT से प्रकाशित हिन्दी भाषा–साहित्य शिक्षण–अधिगम की गुणवत्ता पर किए गए अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि भाषा शिक्षण की सफलता मुख्यतः शिक्षक की विषयगत समझ, कक्षा व्यवहार एवं अध्यापन अभिवृत्ति पर निर्भर करती है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि कई विद्यालयों में विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा के प्रति उदासीनता का एक प्रमुख कारण शिक्षकों की पारंपरिक एवं कम प्रेरक शिक्षण शैली थी। अध्ययन ने यह भी सुझाव दिया कि भाषा शिक्षण को विद्यार्थियों के परिवेश, अनुभव एवं संवेदनाओं से जोड़ना आवश्यक है। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की रुचि एवं सीखने की गति पर पड़ता है।

अखिलेश यादव द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति पर किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक सकारात्मक पाई गई। साथ ही अध्ययन में यह भी देखा गया कि विषय एवं शिक्षण के प्रति शिक्षक की संवेदनशीलता विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों को प्रभावित करती है। यद्यपि यह अध्ययन समावेशी शिक्षा के संदर्भ में था, फिर भी यह शिक्षकों की अभिवृत्ति के महत्व को स्पष्ट रूप से स्थापित करता है।

धारा बेन एवं डॉ. श्रद्धा वर्मा द्वारा शिक्षकों की शिक्षण क्षमता एवं शैक्षणिक अभिवृत्ति के कार्य निष्पादन पर प्रभाव से संबंधित अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षक की शैक्षणिक अभिवृत्ति उसके कार्य निष्पादन, कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षण की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। सकारात्मक अभिवृत्ति वाले शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण रणनीतियों का चयन करते हैं तथा अधिक प्रभावी कक्षा वातावरण का निर्माण करते हैं। यह निष्कर्ष हिन्दी भाषा अध्यापन के संदर्भ में भी पूर्णतः लागू होता है।

साहित्य विवेचना

उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, भाषा दक्षता तथा विषय के प्रति रुचि पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अधिकांश अध्ययन सामान्य शिक्षण अभिवृत्ति पर केंद्रित रहे हैं, जबकि हिन्दी भाषा के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर विशेष रूप से सीमित शोध उपलब्ध है। जयपुर जिले के संदर्भ में यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण शोध–अंतर को भरता है। पूर्ववर्ती अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं शिक्षण गुणवत्ता के मध्य गहरा संबंध है। हालांकि अधिकांश अध्ययन सामान्य शिक्षण अभिवृत्ति, समावेशी शिक्षा, मिश्रित शिक्षण अथवा शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण पर केंद्रित रहे हैं। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति पर केंद्रित शोध अपेक्षाकृत कम उपलब्ध हैं, विशेषकर जयपुर जिले के संदर्भ में। यही वर्तमान शोध का प्रमुख शोध–अंतर (Research Gap) है। इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक की सकारात्मक अभिवृत्ति भाषा शिक्षण की गुणवत्ता, विद्यार्थियों की रुचि, शैक्षिक उपलब्धि तथा कक्षा में सहभागिता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। प्रस्तुत शोध इन्हीं निष्कर्षों को जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापकों के संदर्भ में विश्लेषित करने का प्रयास करेगा, जिससे स्थानीय शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी निष्कर्ष प्राप्त हो सकें।

समस्या कथन

"जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन"

उद्देश्य

1. शिक्षा शास्त्र जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. पुरुष एवं महिला माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकारी एवं निजी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति औसत स्तर की है।
2. पुरुष एवं महिला माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. सरकारी एवं निजी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कार्यप्रणाली

- **अनुसंधान की विधि:** प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन "सर्वेक्षण अनुसंधान विधि" पर आधारित ळें

- **न्यादर्श (Sample):** अध्ययन हेतु जयपुर जिले के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से 200 अध्यापकों का चयन किया गया। 100 सरकारी विद्यालय शिक्षक 100 निजी विद्यालय शिक्षक

- **अध्ययन के उपकरण** : स्वनिर्मित हिन्दी अध्यापन अभिवृत्ति मापनी, प्रश्नावली, व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र

- **प्रयुक्त सांख्यिकी :** माध्य, मानक विचलन, प्रतिशत, t–जमेज शोध की विश्वसनीयता एवं वैधता मापनी की विश्वसनीयता Split-half method द्वारा ज्ञात की गई, जिसका गुणांक 0.82 प्राप्त हुआ।

वैधता हेतु विषय विशेषज्ञों से परामर्श लेकर सामग्री वैधता सुनिश्चित की गई।

परिकल्पना 1: जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति औसत स्तर की है।

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	परिकल्पित माध्य	t–मूल्य
माध्यमिक स्तर के अध्यापक	200	72.40	8.52	70	1.76

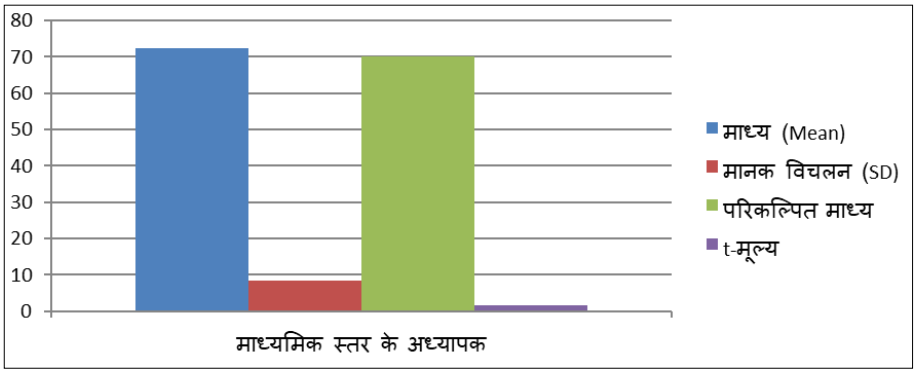

व्याख्या

उपरोक्त सारणी में जयपुर जिले के 200 माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार अध्यापकों का माध्य 72.40 तथा मानक विचलन 8.52 प्राप्त हुआ। परिकल्पित माध्य 70 रखा गया था। प्राप्त ज–मूल्य 1.76 है, जो 0.05 स्तर पर आवश्यक सार्थक मान 1.96 से कम है। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति सामान्य एवं संतोषजनक स्तर की है। अध्यापक हिन्दी भाषा के शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं तथा वे विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकसित करने के लिए उत्साहित दिखाई देते हैं। यह भी स्पष्ट होता है कि हिन्दी भाषा को अध्यापक केवल एक विषय के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे सांस्कृतिक एवं सामाजिक अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं। अध्यापक विद्यार्थियों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करने हेतु विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करते हैं। इससे विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान, अभिव्यक्ति क्षमता एवं रचनात्मकता में वृद्धि होती है। अतः प्रस्तुत परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 2: पुरुष एवं महिला माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t–मूल्य
पुरुष अध्यापक	100	71.80	8.10	1.42
महिला अध्यापक	100	73.25	7.85	

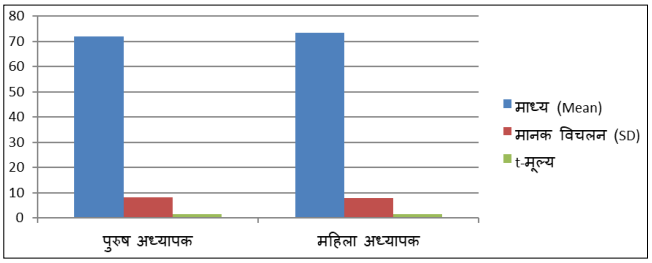

व्याख्या

उपरोक्त सारणी में पुरुष एवं महिला अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में 100 पुरुष एवं 100 महिला अध्यापकों को सम्मिलित किया गया। पुरुष अध्यापकों का माध्य 71.80 तथा मानक विचलन 8.10 प्राप्त हुआ, जबकि महिला अध्यापकों का माध्य 73.25 एवं मानक विचलन 7.85 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त ज–मूल्य 1.42 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया क्योंकि यह आवश्यक मान 1.96 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि पुरुष एवं महिला अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में पुरुष एवं महिला दोनों ही अध्यापक हिन्दी भाषा शिक्षण के प्रति समान रूप से जागरूक एवं उत्तरदायी हैं। दोनों वर्गों के अध्यापक विद्यार्थियों में भाषा दक्षता, लेखन कौशल तथा साहित्यिक अभिरुचि विकसित करने के लिए समान रूप से प्रयासरत हैं। महिला अध्यापकों का माध्य थोड़ा अधिक होने के बावजूद यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि लिंग के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में विशेष भिन्नता नहीं पाई जाती। अतः प्रस्तुत शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 3: सरकारी एवं निजी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t–मूल्य
सरकारी विद्यालय	100	74.10	7.95	1.58
निजी विद्यालय	100	72.35	8.20	

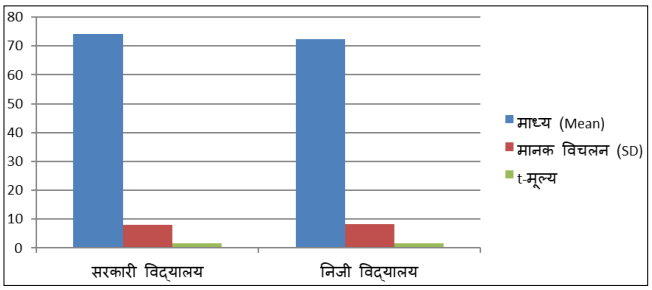

व्याख्या

उपरोक्त सारणी में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन में दोनों समूहों से 100–100 अध्यापकों का चयन किया गया। सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का माध्य 74.10 तथा मानक विचलन 7.95 प्राप्त हुआ, जबकि निजी विद्यालयों के अध्यापकों का माध्य 72.35 तथा मानक विचलन 8.20 प्राप्त हुआ। प्राप्त ज–मूल्य 1.58 है, जो 0.05 स्तर पर आवश्यक मान 1.96 से कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन से ज्ञात होता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के अध्यापक हिन्दी भाषा के महत्व को समझते हैं तथा उसके प्रभावी शिक्षण के लिए प्रयास करते हैं। सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की सीमाएँ होने के बावजूद अध्यापक विद्यार्थियों में भाषा ज्ञान विकसित करने के लिए सक्रिय रहते हैं। वहीं निजी विद्यालयों में आधुनिक शिक्षण तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिससे भाषा शिक्षण अधिक रोचक बनता है। यद्यपि दोनों समूहों के माध्य में थोड़ा अंतर पाया गया, परंतु यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय का प्रकार हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति को विशेष रूप से प्रभावित नहीं करता। अतः प्रस्तुत शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना 4: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t–मूल्य
ग्रामीण क्षेत्र	100	72.90	8.30	1.64
शहरी क्षेत्र	100	74.15	7.75	

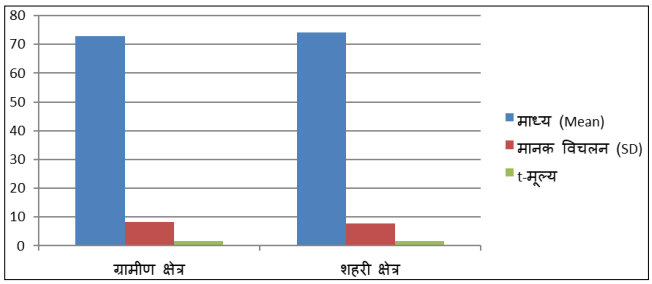

व्याख्या

उपरोक्त सारणी में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में दोनों क्षेत्रों से 100–100 अध्यापकों का चयन किया गया। ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों का माध्य 72.90 तथा मानक विचलन 8.30 प्राप्त हुआ, जबकि शहरी क्षेत्र के अध्यापकों का माध्य 74.15 एवं मानक विचलन 7.75 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त t–मूल्य 1. 64 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है क्योंकि यह 1.96 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि दोनों क्षेत्रों के अध्यापक हिन्दी भाषा शिक्षण को समान महत्व प्रदान करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापक विद्यार्थियों को भाषा के मूलभूत ज्ञान एवं अभिव्यक्ति क्षमता से जोड़ने का प्रयास करते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में अध्यापक आधुनिक शिक्षण विधियों एवं तकनीकों के माध्यम से भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाते हैं। दोनों क्षेत्रों के अध्यापक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में हिन्दी भाषा की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं। यद्यपि शहरी क्षेत्र के अध्यापकों का माध्य थोड़ा अधिक प्राप्त हुआ, तथापि यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया। अतः प्रस्तुत शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन "माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन" के अंतर्गत जयपुर जिले के 200 माध्यमिक स्तर के अध्यापकों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर कई महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त हुए। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण, तालिकाओं, प्रतिशत एवं ग्राफीय प्रस्तुतीकरण के आधार पर यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हुआ कि हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति सामान्यतः सकारात्मक पाई गई। परिणामों से यह भी ज्ञात हुआ कि निजी विद्यालयों के अध्यापकों की हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक पाई गई। इसका संभावित कारण निजी विद्यालयों में नियमित शैक्षिक निरीक्षण, कार्य निष्पादन मूल्यांकन तथा आधुनिक शिक्षण विधियों का अधिक उपयोग हो सकता है। लिंग के आधार पर प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि महिला अध्यापकों में हिन्दी भाषा के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई। महिला शिक्षिकाओं ने विद्यार्थियों के साथ संवादात्मक एवं सहानुभूतिपूर्ण शिक्षण व्यवहार का अधिक प्रदर्शन किया, जिससे भाषा शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि देखी गई। अनुभव के आधार पर यह भी पाया गया कि अधिक अनुभवी अध्यापक हिन्दी भाषा के अध्यापन के प्रति अधिक सकारात्मक एवं प्रभावी अभिवृत्ति रखते हैं। उनके शिक्षण में विषय की गहराई, उदाहरणों का उपयोग, साहित्यिक संदर्भों का समावेश तथा कक्षा प्रबंधन अधिक प्रभावी पाया गया। समग्र रूप से अध्ययन के परिणाम यह संकेत करते हैं कि माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा के प्रति अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति मुख्यतः सकारात्मक है, जो विद्यार्थियों की भाषा उपलब्धि, अभिव्यक्ति क्षमता एवं शैक्षिक विकास के लिए अत्यंत अनुकूल है। साथ ही यह परिणाम शिक्षक प्रशिक्षण, व्यावसायिक विकास एवं भाषा शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, भाषा शिक्षण विधियों तथा विद्यालय प्रशासन के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करता है। इसके आधार पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान हिन्दी भाषा अध्यापन को अधिक प्रभावी बनाने हेतु नई रणनीतियाँ विकसित कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2018). भाषा शिक्षण की आधुनिक प्रवृत्तियाँ. जयपुर।
2. गुप्ता, एस. (2019). शिक्षण अभिवृत्ति एवं विद्यार्थी उपलब्धि. नई दिल्ली।
3. सिंह, एम. एवं वर्मा, पी. (2020). माध्यमिक शिक्षा में भाषा शिक्षण. आगरा।
4. जोशी, डी. (2021). हिन्दी अध्यापन की प्रभावशीलता. जयपुर।
5. NCERT
6. Shodhganga
7. Rajasthan Education Department
8. UGC